भगत पीपा - सबद १

कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥

रागु धनासरी, भगत पीपा, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९५

कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥
काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥१॥
काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥
ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ॥१॥ रहाउ ॥
जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥२॥३॥

सार: न कुछ नष्ट होता है और न ही कुछ नया बनता है, यह एक अहम सच है। पदार्थ और ऊर्जा को खत्म नहीं किया जा सकता, वह बस अपना रूप बदलते हैं। यह सिद्धांत दिखाता है कि ब्रह्मांड आपस में जुड़े हुए तत्वों का एक जटिल जाल है जहाँ तत्व समय की शुरुआत से ही अलग-अलग रूपों में मौजूद रहे हैं और लगातार बदलते रहते हैं। जन्म, लाभ, हानि और गुम होना, यह सब एक ही सच्चाई के भीतर लगातार हो रहे बदलाव के चरण हैं। यह सोच सभी चीज़ों के गहरे आपसी जुड़ाव को उजागर करती है और हमें ब्रह्मांड में अपने सांझे अस्तित्व को पहचानने के लिए प्रेरित करती है।

कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥
शरीर के भीतर ही दिव्य सत्ता का निवास है, यही शरीर स्वयं मंदिर, तीर्थयात्री और पवित्र मार्ग भी है। यह नज़रिया मानव शरीर को दिव्यता के पात्र के रूप में दिखाता है जो सत्य और उद्देश्य की खोज में निरंतर अग्रसर है।

काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥१॥
शरीर में ही धूप, दीपक, नैवेद्य और पूजा के पत्ते विद्यमान हैं। इसका अर्थ है कि हमारा शरीर सम्मान और आदर के योग्य है क्योंकि इसमें अंतरात्मा का वास है, ठीक वैसे ही जैसे धूप में सुगंध होती है और ज्ञान का प्रकाश फैलाने की क्षमता है, जैसे दीपक रौशनी देता है। (१)

काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥
शरीर अनेक लोकों की खोज करता है लेकिन नौ ख़ज़ाने तो इसी के भीतर हैं। यह दर्शाता है कि हमारे विचार बाहरी कर्मकांडों और पहचानों में भटकते रहते हैं जबकि सृष्टि का वास्तविक सार आंतरिक चेतना में प्रकट होता है।

ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ॥१॥ रहाउ ॥
न कुछ पाया जाता है और न कुछ खोता है, यह अहसास सर्वव्यापी चेतना पर चिंतन और उसे अपनाने से होता है। यह उस सत्य को व्यक्त करती है कि जब आंतरिक चेतना सर्वव्यापी उपस्थिति के साथ जुड़ जाती है तब वह लाभ-हानि और जन्म-मृत्यु की माया की सीमा से ऊपर उठ जाती है। (१)(विराम)

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
जो ऊर्जा पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है, वही शरीर में भी निवास करती है जो कोई भी इस सर्वव्यापी शक्ति की खोज करता है, वह इसे अपने भीतर ही पाता है। यह बाहरी और आंतरिक वास्तविकता के बीच एक सहज निरंतरता का संकेत है जहाँ भेद मिट जाते हैं।

पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥२॥३॥
पीपा कहते हैं कि वह परम तत्व को पाने के लिए प्रार्थना करते हैं जो अंतर्दृष्टि के सत्य को समझने में निहित है। यह ऐसे साधक को दर्शाता है जो उस ज्ञान की तलाश में है जो अज्ञान के अंधेरे से समझ के प्रकाश की ओर ले जाता है। (२)(३)

तत्त्व: भक्त पीपा का कहना है कि मानवीय शरीर अपने आप में संपूर्ण ब्रह्मांड समान है, ऐसा पवित्र माध्यम जिसके ज़रिए वह अदृश्य और सर्वव्यापी चेतना सुलभ हो जाती है। शरीर सिर्फ़ भौतिक रूप नहीं है, यह एक जीवंत मंदिर है जहाँ चिंतन, भावना और अनुभव का मिलन होता है। जब हम आत्म-चिंतन के ज़रिए अपने शरीर का सम्मान करते हैं तब यह आध्यात्मिक विकास और आत्म-उत्थान का साधन बन जाता है। यह दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि शरीर को उसी रूप में सम्मान दें जैसा वह है क्योंकि इसी माध्यम से हमारा आंतरिक जगत, बाहरी ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com